रिकॉर्ड :– जाने न नज़र..... ओम् शान्ति। यह स्थापना है नई, जिसको सिर्फ ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मण–ब्राह्मणियाँ ही समझती हो। कहने में भल तुम बी.के. कहलाते हो; परन्तु लिखा–पढ़ी में अथवा जहाँ भी हो सके तो ब्रह्मा मुखवंशावली कहना अथवा लिखना ठीक है; क्योंकि यह नॉलेज है नई और बहुत पेचीदी। कोई को जब कहा जाता है कि यहाँ बाबा–मम्मा रहते हैं तो नए लोग समझेंगे, ये युगल हैं। ऐसे कब नहीं समझेंगे कि ब्रह्मा की मुखवंशावली है। सिर्फ ऐसे भी नहीं कहना है, ब्रह्मावंशी। ऐसे तो बाप के बच्चे सभी हैं; परन्तु मुखवंशावली अक्षर लिखने से ऐसे कब न समझेंगे कि ब्रह्मा की कुखवंशी बच्चे हैं। नहीं। एक–एक अक्षर का अर्थ अच्छी रीत समझना पड़ता है। अब ब्रह्मा को कहा जाता है प्रजापिता। उन्होंने तो लिख दिया है कृष्ण को इतनी राणियाँ थीं, इतने बच्चे थे। तो रोला कर दिया है। ऐसे तो हो नहीं सकता। प्रजापिता ब्रह्मा मशहूर है। कृष्ण को प्रजापिता नहीं कहेंगे, जो उनको इतने बच्चे हो। कहाँ से आए? वो तो बिल्कुल रॉंग है। शास्त्रों में बहुत रोला है। वो लोग नहीं समझते हैं कि हम कोई ग्लानि करते हैं। गाते भी है, यदा यदा.... परन्तु ग्लानि किसमें है वो तो कोई समझते नहीं। बाप आकर सिद्ध कर समझाते हैं, शास्त्रों में कितनी ग्लानि लिखी हुई है। ईश्वर सर्वव्यापी है, यह भी शास्त्रों में है। सारा मदार भारत का इन शास्त्रों पर है। शास्त्रों में ही ग्लानि है। अब समझाया जाता है कि हम बी.के. हैं तो ज़रूर एडॉप्टेड हुए होंगे ना। ब्रह्मा को इतने लौकिक बच्चे तो नहीं हो सकते। प्रजापिता ब्रह्मा कहा जाता है तो ज़रूर ब्रह्मा के साथ फिर माता चाहिए। अगर माता भी हो तो भी इतने बच्चे पैदा कर न सके। ये है ब्रह्मा मुखवंशावली। तो समझाना है, तुम भी प्रजापिता ब्रह्मा की संतान हो। परमपिता प० ने जब नई सृष्टि रची है तो पहले ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मणों को रचा है। निराकार प० तो आत्माओं का बाप है ही। फिर साकार सृष्टि रची जाती है। तो परमपिता प० ब्रह्मा द्वारा रचते हैं। प्रजापिता नाम इसलिए सिर्फ ब्रह्मा का है। विष्णु को वा शंकर को प्रजापिता नहीं कहेंगे। देखो, ये बहुत समझने और विचार–सागर–मंथन करने की बातें हैं। बाकी किसको समझाना कि बाप को याद करो, मनमनाभव, वो तो बहुत सहज बात है। ये है किसको डिटेल में समझाना। प्रजापिता ब्रह्मा की तो ज़रूर मुखवंशावली ही हो सकती है। फिर स्त्री का प्रश्न ही नहीं उठता। वास्तव में त्वमेव माताश्च पिता..... तो एक प० को ही कहा जाता है। ये भी एक बड़ी भारी गांठ है। यहाँ साकार में मम्मा–बाबा बैठे हैं उनको 'तुम मात–पिता' कह नहीं सकते। यह महिमा हम करते ही हैं उस निराकार परमपिता प० की। वो बाप है तो ये (साकार ब्रह्मा) माता हो जाती। दुनिया में फिर जगतअम्बा का नाम मशहूर है। वो अलग बात हो जाती। इस माता (ब्रह्मा) को तो जगतअम्बा नहीं कहा जा सकता। तो ये बातें समझना बड़ा मुश्किल है। बड़ी गुह्य बातें हैं। उस दिन भी बाबा ने बहुत अच्छी प्वाइंट समझाई थी कि लौकिक बाप जो होते हैं वो तो खुशी के लिए बच्चे को जन्म देते हैं। बच्चे को सुख देने लिए क्रियेट करते हैं। ये बहुत गुह्य बातें हैं। सभी के बुद्धि में बैठ न सके। इसमें बड़ी क्लीयर बुद्धि चाहिए। तो बाप खुशी से बच्चे माँगते हैं। देवी–देवताओं के मंदिर में जाएँगे, कहेंगे– हमको बच्चा चाहिए। एक भी बच्चा हो तो हमारी वंशावली कट न हो जाए, हमारे कुल का नाम निकाले। तो सुख के लिए बच्चा चाहते हैं; परन्तु बच्चा कब अंधा–लूल्ला–लंगड़ा जन्मता है वा जन्मते ही बीमार, रोगी होता है तो कहा जाता है, पास्ट जन्म के ऐसे कर्म हैं। इसमें माँ–बाप का तो दोष नहीं कहेंगे, उनके पास्ट के कर्म आड़ो पड़ते हैं। अब इस समय बेहद का बाप बच्चों को एडॉप्ट

करते हैं सुख के लिए और ऐसे कर्म सिखाते हैं जो आधा कल्प कब दुख की बात नहीं आती। देखो, ये बातें कोई गीता भागवत में नहीं है। वो तो सभी जैसे दंत–कथाएँ हैं। बाप कहते हैं, मैं तुमको एडॉप्ट करता हूँ। डायरैक्ट आत्माओं अथवा जीव आत्माओं को समझाते हैं। कहा भी जाता है कि आत्मा ऐसा कर्म करके आई है। आत्मा को शरीर तो लेना ही है। अब तुम आत्माओं को ऐसे अच्छे कर्म सिखाता हूँ। एक तो वहाँ माया होती नहीं। फिर भी पुरुषार्थ अनुसार नम्बरवार पद तो हैं ना। चाहे राजा–राणी बनो, चाहे साहुकार, गरीब प्रजा बनो। वो पुरुषार्थ की अब मार्जिन है। ऐसे अच्छे कर्म करो जो ऊँच पद पाओ। भल वहाँ है ही सुखधाम, दुख का नाम–निशान नहीं है। फिर भी नम्बरवार मर्तबा तो है ना। यहाँ दुखधाम में भी अ..... मर्तबा है। वहाँ भी सुख तो सभी को है, फिर मर्तबा पाने लिए पुरुषार्थ कराया जाता है। तो इस समय हम ऐसे कर्म सिखाते हैं जो वहाँ ऐसा कोई बच्चा दुखी न होगा जो पास्ट के कर्म कूटे; जैसे अब होता है। ये बहुत समझने की बातें हैं। बाबा कहता है, आज बहुत गुह्य बातें सुनाता हूँ। सर्विस में जो तत्पर होंगे उनको ये बातें भुचेंगी और विचार–सागर चलेगा। कोई को एक ही ऐसी बात समझावेंगे जो उनके कपाट खुल जाएँगे। जो बहुत ऊँच कोटी के महारथी होंगे वो फील करेंगे कि ये बहुत गुह्य बातें हैं। सेकंड, थर्ड ग्रेड वालों को धारणा नहीं होगी। ऐसी युक्ति से समझाना चाहिए, जो काई भी समझे, ये बात तो राइट है। अच्छा–2 तो बहुत कहेंगे; परन्तु आकर लेवे, वह है तकदीर पर। जो कल्प पहले वाले होंगे सिकीलधे, वो घट(झट) उठाए लेंगे। हमारी नॉलेज ही ऐसी गुह्य है। ऐसे नहीं कि ये कोई परम्परा चलनी है। ये नॉलेज अब मिली, फिर वापस जाएँगे तो खलास। बस, यह मरजीवा जन्म का पार्ट खलास। फिर है प्रालब्ध। ज्ञान सारा बुद्धि से निकल जाता है। ऐसे मत समझना कि आत्मा ज्ञान के संस्कार ले जाती है। नहीं। जैसे यहाँ मनुष्य पढ़ाई के संस्कार ले जाते हैं उस अनुसार जन्म लेते हैं। नहीं। हम संस्कार लेते हैं राजाई के लिए। ज्ञान का पार्ट पूरा हुआ, प्रालब्ध मिली, खलास, फिर हम राजाई में होंगे। ये ज्ञान प्रायःलोप हो जाता है, परम्परा नहीं चलता। मनुष्यों ने फिर लिख दिया है कि परम्परा चला। समझते हैं, शास्त्र भी परम्परा सतयुग से चले आते हैं। ऐसे तो है नहीं; परन्तु यह भी सब ड्रामा अनुसार बना हुआ है। कोई का दोष नहीं है। मनुष्य तो वही देखो शिव की पूजा करेंगे नहीं, कह देंगे सब कल्पना है। कितने मूर्ख हैं! हम अभी समझते हैं, हम भी मूर्ख थे, शिव की पूजा करते थे, समझते कुछ नहीं थे। सन्यासी भी पूजा करते हैं। ये सब हैं भक्तिमार्ग। एक तरफ कहते प० सर्वव्यापी। अरे, फिर प०पि० की पूजा क्यों करते हैं? इसमें समझाने की शुरुड़ बुद्धि चाहिए। ये जानते हैं, जो ऊँच राजा–राणी बनने वाले होंगे, वो उतना ज्ञान धारण कर सर्विस करेंगे और कर रहे हैं। मम्मा–बाबा को देखते हो ना। बच्चों में भी समझ सकते हो, कौन–2 अच्छे–2 हैं जो अच्छा दुकान संभाल रहे हैं। नई–2 बच्चियों को दुकान जमाने में देरी लगती है। ये भी व्यापार है ना। कहते भी हैं कोई बिरला व्यापारी..... और फिर उनको रत्नागर भी कहते हैं। ज्ञान रत्नों का व्यापार करने वाला ज्ञान सागर। ये ज्ञान रत्न भविष्य के लिए मालामाल करते हैं। ज्ञान से सद्गति होती है। सद्गति कहा जाता है सतयुग को। दुर्गति कलियुग को। बाबा ने समझाया है कि हमेशा गाँधी का नाम लियो। उसने कहा– पतित–पावन.... गोया अपन को भी पतित सिद्ध किया। पावन करने वाला एक नहीं है। गाँधी का नाम तो बाला है। गीता भी हाथ में थी, आए कहते थे– पतित–पावन.... अब राम क्यों कहा, जब गीता का भगवान कृष्ण है? उसका मतलब राम प० के लिए है। हाथ में थी गीता। तो गीता का भगवान परमपिता प० शिव बरोबर पतित–पावन है, न कि कृष्ण।

ये कितनी बड़ी गांठ पड़ गई है। ये बातें बाप के सिवाय तो कोई समझाए नहीं सकते। ये है ही पतित दुनिया, तो फिर महात्माएँ कहाँ से आए! पतित दुनिया में गुरु भी पतित हो गए। ऐसी–2 बातें समझानी हैं। जहाँ–तहाँ आते भी गरीब लोग हैं। बड़े–2 आदमियों से भल तुम माथा मारती हो, तो सिर्फ मान देने लिए आते हैं। भल चीफ जस्टिस भी आते हैं तो बड़ाई के लिए। ये तो प्रेसिडेंट बनते रहते हैं, आपको(के) पास भी आकर सभा पति बनेंगे। भल राधाकृष्णन भी आए, तो मान–मर्तबे के लिए आएँगे, बाकी समझने लिए गरीब ही निकलेंगे। बाबा ने कहा है– साहुकार कोई 100 में एक आएगा साधारण। 100 में 10 निकलेंगे, बाकी सब गरीब ही आएँगे। ऐसे ही चलता रहेगा। मंजिल बड़ी ऊँची है। पहले तो एक हफ्ता भट्ठी में ज़रूर पड़ना पड़े। ये कायदा है और साथ भी चाहिए ब्राह्मणों का। शूद्रों का मुँह भी न देखे। ये नॉलेज बड़ी गुह्य है। भगवान पढ़ाते हैं सृष्टि का मालिक बनाने लिए। मासी का घर थोड़े ही है; और है गरीबों लिए। देखो, मम्मा गरीब और साधारण है; परन्तु मर्तबा कितना ऊँच लेती है। पहले माता, फिर पिता, त्वमेव माता पिता.... यह महिमा तो उस बाप की है; परन्तु बाबा ने फिर माता को ऊँच मर्तबा दिलाया है; क्योंकि मनुष्य का मर्तबा भी होना चाहिए ना। अपना गीत था ना– मनुष्य का क्या मर्तबा.....। वो लोग फिर गाते हैं, सबसे अच्छा हमारा हिन्दुस्तान। यह नहीं समझते कि कोई समय अच्छा था, अब तो बर्थ नॉट ए पैनी है। समझते हैं, हमारा देश सबसे अच्छा है; परन्तु हम कहते हैं अच्छा था। गॉड–गॉडेज़ का राज्य था, जो ल०ना० के चित्र भी हैं। ये है मु(ख्य) चित्र; इसलिए बाबा ल०ना० के चित्र बनवाए रहे हैं। ल०ना० के बड़े–2 मंदिर बनाते हैं। तो बाबा भी ऐसा चित्र बनवाते हैं, तो किसको समझाने में सहज होगा। उस सहज राजयोग और ज्ञान से ऐसा राजाओं का राजा बनेंगे। किंग और क्वीन ल०ना० का नाम बाला है। कोई–2 मंदिर में चित्र बहुत अच्छे हैं। कहाँ फिर ना० को साँवरा तो लक्ष्मी को गोरा बनाए देते। ना० को चार भुजा तो लक्ष्मी को दो भुजा दे देते। कुछ भी अर्थ सिद्ध नहीं होता। तो बुद्धुओं को समझाना पड़ता है। बिल्कुल अन्जान हैं। जैसे हम चक्राता में गए थे, तो वहाँ खेती करने वाले पहले नहीं थे, उनको अपना धंधा ही अच्छा लगता था। अब ये भी सभी अधर्मी हैं। कहते हैं, हम रिलीजन को नहीं मानते; क्योंकि जानते ही नहीं कि हमारा रिलीजन कौन–सा है। हिन्दू धर्म तो शोभता नहीं; इसलिए अपने धर्म को न जानने कारण कह देते, हम रिलीजन को नहीं मानते। जानते ही नहीं तो माने कैसे! सब समझते, आदि सनातन हिन्दू धर्म है। देवता धर्म कहे तो पुरानी बात याद भी आए कि भारत कितना अच्छा था। ये तो झूठा घमंड है, जो कहते, अच्छा है। वास्तव में तो हर बात में कंगाल है। 100% ऊँच था, अब 100% नीचे हैं। एक तरफ गाते– कितना अच्छा देश हमारा, दूसरे तरफ गाते, भारत की क्या हालत है! सब चीज़ काल्पेन(काल्पनिक) होते हैं। भारत पर सभी को तरस पड़ता है। वो भी जानते हैं कि आगे भारत बहुत अच्छा था। अब कंगाल है। भारतवासी यह भी नहीं जानते कि हम कंगाल बने हैं। इस समय में भारत अनाथ आश्रम है। अनाथ माना ऑरफन अथवा नास्तिक समझो। ये हमारे सिवाय दुनिया में कोई नहीं जानते। हमारे में भी जो सेन्सीबुल बच्चे हैं, जिनका दिमाग ज्ञान से पूर रहता है, वो समझते हैं और खुश रहते हैं। हम स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं, ऐसे दिमाग वाले तो खुशी में नाचेंगे। बाप तो कहते हैं जैसे ये मम्मा–बाबा ऊँच वर्सा लेते हैं, तुम भी ऐसे फॉलो करो। मेरे से तो तुमको बादशाही लेनी है, मुझे फॉलो नहीं करना है, फॉलो इनको करना है। हाँ, मेरे पीछे–2 मेरे धाम में तो आना ही है। प्युअर न बनेंगे तो आग में भी जलाए, तुम आत्माओं को ले जाऊँगा। इसलिए मेरी मत पर चलो, वफादार–फरमानबरदार बनो, नहीं तो सज़ाए खाएँगे। जैसे लौकिक बाप समझाते हैं वैसे पारलौकिक बाप भी समझाते हैं। अज्ञान काल में भी यह बुद्धि में रहता है कि हम क्या पढ़ रहे हैं। हम(को) फलाणा मास्टर पढ़ाते हैं। यह तो बाप, टीचर, सत्गुरु है। इनको तो दुगुना याद करना चाहिए; परन्तु माया याद करने नहीं देती। समझाना तो बड़ा सहज है। हमको बाप ऐसे करने सिखाते हैं जो हम भविष्य में ऐसे कब न कहेंगे कि पास्ट के कर्म आड़ो आए। बाबा की एक–2 प्वाइंट में

बहुत गुह्य राज़ है। धारणा तब हो जब बाबा से योग हो, लव हो; क्योंकि वो है प्राणों से प्यारा। 21 जन्म प्राणों को जमघटों की फाँसी से छुड़ाते हैं। आगे तो काल को भेजता था, फिर गर्भ में सज़ा देता था। अब तो कहते हैं, मैं कालों का काल हूँ। सतयुग–त्रेता में तो ये काल का नाम ही नहीं होगा। वास्तव में तो काल आदि कोई है नहीं। आत्मा अपने समय पर एक शरीर छोड़ दूसरे शरीर में चली जाती है। वहाँ गर्भ जेल में अपने पार्ट अनुसार सज़ाएँ भोगना है। बाकी जैसे सत्यवान–सावित्री की कथा में दिखाया है वैसे कोई काल आदि है नहीं। ये आत्मा तो आपे ही शरीर छोड़ गर्भ जेल में अपने कर्मों की सज़ा भोगते हैं। सतयुग में तो गर्भ महल है। इसका भी दृष्टांत है। शास्त्रों में है कि वो बाहर ही नहीं निकलता था। यहाँ तो गर्भ जेल है; क्योंकि दुख भोगते हैं। कृष्ण के लिए दिखाते हैं, सागर में पत्ते पर आया। वास्तव में है गर्भ महल की बात। कितनी बातें समझाते हैं; परन्तु धारणा भी हो। मैनर्स भी सीखने पड़ते हैं। बहुत मीठा बनना है। जैसे बाबा मीठा है, सुख का सागर है, भारत को सुखधाम बनाते हैं। एक–2 बात बड़ी गुह्य समझाई जाती हैं, जिसको धारण करने से अंदर से जैसे हीअर–2 निकलती हैं। जैसे डान्सिंग गर्ल डांस करते हैं तो वाह–2 करते हैं। इसमें भी दिल खुश होती है। ओहो! प्वाइंट्स तो बहुत अच्छी है। कोई झट समझ जाए, बाबा कितने अच्छे कर्म सिखाते हैं। कर्म–अकर्म–विकर्म की बात गीता में भी है; परन्तु गीता पर कृष्ण का नाम डाल गीता को खंडन कर दिया है। अब फिर कह देते हैं, कृष्ण, राम, शिव सब वो ही है। ये बातें बहुत मीठी हैं। अब किसको जाकर सुनावें? स(बसे) अच्छे हैं वानप्रस्थ वाले। इसको तो सदैव फुर्सत है। बनारस में भी वानप्रस्थियों के बहुत आश्रम हैं; परन्तु कोई उड़ने वाला चाहिए। बाबा डायरैक्शन तो बहुत देते हैं; परन्तु उनपर चलते नहीं। सेन्टर खुलने पहले तो ग्राहक देखना चाहिए। देखो, बच्चियाँ अजमेर गईं, कितनी मनुष्यों की गंदी रहणी हैं, केई तो स्नान भी नहीं करते। यहाँ कितनी परहेज़ है। आजकल फैशन भी कितना निकला है। नाटक में जाने से इमॉरैलिटी के संस्कार आ जाते हैं। देहली में देखो, बड़े–2 आदमियों को गाने का फैशन का बड़ा शौक रहता है। इसलिए समझते हैं, भारत तो जैसे परिस्तान बन गया है। ये पता नहीं है कि ये परिस्तान ही फिर कब्रस्तान बनना है। कभी–2 विचार आता है कि अब ये बॉम्ब्स छूटेंगे। कितने फैशनेबुल, धनवान नफीर लोग, सभी खलास हो जाएँगे। ये भी हम समझते हैं। मनुष्य तो अंध में पड़े हैं। कुछ भी होने में देरी थोड़े ही लगती है। बॉम्बे कितनी अच्छी है, बस हमारे होते ये बॉम्बे नहीं रहेगी। जब सागर उथल खाएगा तो क्या हाल होगा, नैचरल कैलेमिटीज़ आएँगी तो कैसे मरेंगे। हमको तो पहले से ही समझ में आवेगा कि हम अब जाते हैं। जैसे अ(स्त्र)–शस्त्र होते हैं। अब हम जाए रहे हैं, जाकर परमधाम विश्राम करेंगे। फिर तो हमको फर्स्ट क्लास शरीर मिलेगा। ये ज्ञानवान की अवस्था रहेगी, सभी की नहीं। बीमारी में भी बड़े हर्षित रहेंगे। हमने तो कमाई कर ली है, जाकर ऊँच पद पाएँगे। ये खुशी रहती है। ऐसे बहुत साधु–सन्यासी बैठे शरीर छोड़ते हैं। पहले से पता पड़ता है, हमको भी तो जाना है। कोई–2 रहेंगे। तो ऐसा खुशी का पारा उस समय रहेगा। जैसे मेजर लिए बताया कि रजवाड़े कुल में जन्म लिया है। तो अच्छा है ना! भल छोटा होगा; परन्तु उनकी चलन बहुत अच्छी होगी। कब रोता नहीं होगा। तो ये हम जानते हैं, हम संस्कार ले जाएँगे तो माँ–बाप को बड़ा सुख देंगे। यहाँ के बच्चे तो बड़ा हैरान करते हैं। हम जानते हैं, जैसे कृष्ण की कितनी महिमा है, कितना प्यार करते हैं, वैसे हम भी बहुत प्यारे होंगे। ऐसी अवस्था चाहिए। बाकी सिर्फ भाषण करना, ये तो बहुतों में हुनर होता है; परन्तु अंदर पोलमपोल होता है। यहाँ तो साथ–2 ऐसी अवस्था भी चाहिए। इस नॉलेज का नशा बहुत भारी है। अच्छा, बापदादा, मीठी मम्मा का सिकीलधे बच्चों को गुडमॉर्निंग।

ॐ